Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

वेद संहिताऑ में रूद्र : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Mr.Bhaveshkumar Patil Pacific Acadamy higher education	Dr. Varshaben H. Patel Shamlaji Arts College College Affiliation

सार

इस शोधपत्रका मुख्य हेतु भगवान् शिव का शम्भू स्वरूप, पिनाकी स्वरूप,गिरीश स्वरूप, स्थाणु स्वरूप, भव स्वरूप, भर्ग स्वरूप, सदाशिव स्वरूप,शिव स्वरूप हर स्वरूप, कपाली स्वरूप और शर्व स्वरूप को विश्लेतित रूप में चर्चा करना और मानव जीवन में उन सब स्वरूपों की उपयोगिता सिद्ध करना है । भाषा गतिशील तत्व है विवरणात्मक विश्लेषण करने हेतु हम इस संशोधन में भाषा को स्थिर रखेंगे और विवरणात्मक विश्लेषण कार्यपद्धति का उपयोग करेंगे। इस संशोधन में पत्रमें रुद्राष्टध्यायी के पंचम अध्याय के कुछ श्लोकों को विश्लेषण के लिए मुलभुत माने गए है।इस अध्ययन पर प्रतिबिंबित होता है की सभी शिव स्वरूप मानवजीवन के लिए बहुमूल्य है लेकिन उनका यथार्थ श्रद्धा के साथ प्रार्थना करना आवश्यक है। इस शोधपत्र के दायरे को विस्तारित करके पुन: संशोधन कर सकते है

कुंजी शब्दों: शम्भू स्वरूप, पिनाकी स्वरूप,गिरीश स्वरूप, स्थाणु स्वरूप, भव स्वरूप, मानवजीवन

परिचय

वैदिक धर्म के देवतगण अनेक हैं, उनमें एक रुद्रदेवता भी हैं। ऋग्वेद में रुद्र की स्तुति 'बलिष्टों में बलिष्ट' कहकर की गयी है। यजुर्वेद का श्रीरुद्रम् मंत्र, रुद्र देवता को समर्पित है। यह मंत्र शैव सम्प्रदाय में बहुत महत्वपूर्ण है। अनेक गुणों में शिव और रुद्र में समानता है। वेदों में रुद्र नाम परमात्मा, जीवात्मा, तथा शूरवीर के लिए प्रयुक्त हुआ है। यजुर्वेद के रुद्राध्याय में रुद्र के अनंत रूप वर्णन किए हैं। इस वर्णन से पता चलता

है कि यह संपूर्ण विश्व इन रुद्रों से भरा हुआ है। वेदों में रुद्र नाम परमात्मा, जीवात्मा, तथा शूरवीर के लिए प्रयुक्त हुआ है। यजुर्वेद के रुद्राध्याय में रुद्र के अनंत रूप वर्णन किए हैं। इस वर्णन से पता चलता है कि यह संपूर्ण विश्व इन रुद्रों से भरा हुआ है। *रु' का अर्थ 'शब्द करना' है - जो शब्द करता है, अथवा शब्द करता हुआ पिघलता है, वह रुद्र है।' ऐस काठकों का मत है।* शब्द करना, यह रुद्र का लक्षण है।'रुद्र' पद के ये अर्थ स्पष्ट रूप से बता रहे हैं कि यह रुद्र सर्वव्यापक परमात्मा ही है। यही भाव इस वेदमंत्र में है- 'अंतरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया। (ऋ.८.७२.३)

इस शोध निबन्ध में हमने रूद्र के अलग अलग स्वरूप को समझने के लिए यथार्थ प्रयत्न किया है इसे शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी भी कहते हैं। शिव और अष्टाध्यायी अर्थात् आठ अध्यायों वाला, इन आठ अध्यायों में शिव समाए हैं। वैसे तो रुद्राष्टाध्यायी में कुल दस अध्याय हैं परंतु आठ तक को ही मुख्य माना जाता है। इसी रुद्र (शिव) के उपासना के निमित्त रुद्राष्टाध्यायी ग्रंथ वेद का ही सारभूत संग्रह है। जिस प्रकार दूध से मक्खन निकालते हैं उसी प्रकार जनकल्याणार्थ शुक्लयजुर्वेद से रुद्राष्टाध्यायी का भी संग्रह हुआ है। इस ग्रंथ में गृहस्थधर्म, राजधर्म, ज्ञान-वैराज्ञ, शांति, ईश्वरस्तुति आदि अनेक सर्वोत्तम विषयों का वर्णन है।मनुष्य का मन विषयलोलुप होकर अधोगति को प्राप्त न हो और व्यक्ति अपनी चित्तवृत्तियों को स्वच्छ रख सके इसके निमित्त रुद्र का अनुष्ठान करना मुख्य और उत्कृष्ट साधन है। यह रुद्रानुष्ठान प्रवृत्ति मार्ग से निवृत्ति मार्ग को प्राप्त करने में समर्थ है। इसमें ब्रह्म (शिव) के निर्गुण और सगुण दोनो रूपों का वर्णन हुआ है। जहाँ लोक में इसके जप, पाठ तथा अभिषेक आदि साधनों से भगवद्भक्ति, शांति, पुत्र पौत्रादि वृद्धि, धन धान्य की सम्पन्नता और स्वस्थ जीवन की प्राप्ति होती है; वहीं परलोक में सद्गति एवं मोक्ष भी प्राप्त होता है। । वेद के ब्राह्मण ग्रंथों में, उपनिषद, स्मृति तथा कई पुराणों में रुद्राष्टाध्यायी तथा रुद्राभिषेक की महिमा का वर्णन है।रुद्राष्टाध्यायी अत्यंत ही मूल्यवान है, न ही इससे बिना रुद्राभिषेक ही संभव है और न ही इसके बिना शिव पूजन ही किया जा सकता है। यह शुक्लयजुर्वेद का मुख्य भाग है। इसमें मुख्यत: आठ अध्याय हैं पर अंतिम में शान्त्यध्याय: नामक नवम तथा स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय: नामक दशम अध्याय भी हैं। इसके प्रथम अध्याय में कुल 10 श्लोक है तथा सर्वप्रथम गणेशावाहन मंत्र है, प्रथम अध्याय में शिवसंकल्पसुक्त है। द्वितीय अध्याय में कुल 22 वैदिक श्लोक हैं जिनमें पुरुसुक्त (मुख्यत: 16 श्लोक) है। इसी प्रकार आदित्य सुक्त तथा वज्र सुक्त भी सम्मिलित हैं। पंचम अध्याय में परम् लाभदायक रुद्रसुक्त है, इसमें कुल 66 श्लोक हैं। छठें अध्याय के पंचम श्लोक के रूप में महान महामृत्युञ्जय श्लोक है। सप्तम अध्याय में 7 श्लोकों की अरण्यक श्रुति है प्रायश्चित्त हवन आदि में इसका उपयोग होता है। अष्टम अध्याय को नमक-चमक भी कहते हैं जिसमें 24 श्लोक हैं।

हम मुख्यत्वे रूद्र तत्व को समझने के लिए रुद्राष्टध्यायी के आठ अध्याय को सन्दर्भ लेते हुए विश्लेषण करेंगे इस विश्लेषण के लिए मूल ग्रन्थ के रूप में श्री यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी- खेमराज -श्री कृष्णदास स्रष्टि (मुंबई) संवत २०१३ शके १८७८ को सन्दर्भ के रूपमें लिया है ।

इस अध्ययन का दायरा

इस शोधपत्र में रुद्रातत्व को समझने के लिए उनका विश्लेषण किया गया है रूद्र स्वरूप,रूद्र तत्त्व और रूद्रमहिमा को समझने के लिये लभ्य ग्रंथों का सन्दर्भ लिया गया है। रुद्राष्टाध्यायी में यथार्थ रूपसे रूद्र के बारे में विवरण किया गाया है लेकिन सरल विश्लेषण उनमें रहल भावों को समझने के लिए श्लोकों का तलस्पर्शी अभ्यास करना अति आवश्यक है। रुद्राष्टाध्यायी के मुख्य आठ अध्याय के अभ्यास द्वारा रूद्र को समजना और उनकी मानवजीवन में उपयोगिता प्रस्तुत करने का हमारा उद्देश्य है । इस संशोधन में रुद्राष्टध्यायी के पंचम अध्याय के ६६ श्लोकों को विश्लेषण के लिए मुलभुत माने गए है क्यों की ऐसा माना जाता है की पंचम अध्याय मनुष्यजाति के लिये कष्ट दूर करनेवाला याने अत्यंत लाभदायक है प्रधम अध्याय में गणेश जी के सूक्त है जो प्रारंभिक है द्वितीय अध्यायमें पुरुसूक्त है जो तीसरा अध्याय आदित्यसूक्त है चतुर्थ अध्याय वज्रसूक्त है पंचम अध्याय रुद्रसूक्त है जो जो इस संशोधमें केंद्रीय स्थान पर है छठे अध्यायमें श्लोक के रूप में महान महामृत्युञ्जय श्लोक है। सप्तम अध्याय में अरण्यक श्रुति है प्रायश्चित्त हवन आदि में इसका उपयोग होता है। अष्टम अध्याय को नमक-चमक भी कहते हैं । इसी तरह रूद्र को समझने के लिए इन सब का आधार लिया है ।

पुरवसाहित्यिक कार्य का मुल्यांकन

रुद्राष्टाध्यायी(२००६) गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित ग्रन्ध में ऋचाओं का हिंदी में सटीक लिखते हुए बताते है की अध्याय पंचम में महामृत्युंजय स्वयं आराधयित किया गया है जिसकी उपासना से मनुष्यमात्र कष्टविहीन होता है यही कहा गया है की मृत्यु सम्बन्धी जो भी डर है वह दूर हो जाता है। यह एक शिवजी की शक्ति है जो खुद शिवजी उपासक के शरीरमें ग्राह्य कर देते है । इस संशोधन का फल:स्वरूप मानना है की इस ग्रन्थ का अध्ययन रुद्रतत्व को समजने के लिये काफी हद तक मददरूप होगा ।

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी (२०१५) में पंडित वेणीराम शर्मा अपनी सकारात्मक बात रखते हुए लिखते है की मनुष्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए और शिवतत्व समझने के लिए शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी की आराधना जरुरी है। वह अपने इस ग्रन्धमें श्लोकों का भावानुवाद देते हुए कहते है की रूद्र ही सब कुछ है इनके अलावा सब मिथ्या है । इस संशोधकों का पक्ष है की रूद्र तत्त्व को समझने के लिए सिर्फ ग्रन्थ पठान ही आवश्यक नहीं है किन्तु उनकी आराधना करके जीवन में उतारना जरुरी है।

पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्रा (२०१३) अपनी प्रकाशित साहित्य ग्रन्थावलकि के अंतर्गत "श्री यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी " में अपना सन्दर्भ देते हुए लिखते है की वेद ही सम्पूर्णज्ञान का भडार है। आगे लिखते है की जो शाट रूद्रिय पाठ करता है। वह जैसे अग्नि से निकाले पदार्थ सुवर्ण आदि पवित्र हो जाते है तदवत पवित्र होता है ,कृत्यकृत्य से पवित्र होता है ।वह संसार सागर पार करने की क्षमता रखता है ।अर्थात इस शोष महानिबन्ध के संशोधकों को उस बात का अध्ययन करके प्रतिपादित करना है की उनकी उपलब्धि और उपयोगिया के अंश कितने है ।ऐसी तरह इस सन्दर्भ ग्रन्थ हमारे विषय का मुख्य स्त्रोत्र है।

शिवपुराण (२००६) गीताप्रेस से प्रकाशित हुए ग्रंथमें भगवान् शिव के जीवन चरित्र के बारेमें लिखागया है । उनमें शिवभक्ति और उनके विविध स्वरूप का विवरण किया गाया है । भगवान् शंकर का त्याग,वात्सल्य आदि का विवरण किया गया है ।जो इस शंशोधन की पूर्वभूमिका रचने के लिये मदद रूप हो सकता है।

पंडित धनञ्जय शर्मा(२००८) अपने आर्टिकल में लिखते है की भगवान् शिवा के अलग अलग रूद्र स्वरूप का कर्तुत्व क्या था ? शास्त्रों के मुताबिक़ आगेबताते है की रूद्र का शाब्दिक अर्थ होता है की - रुत यानि दु:खों को अंत करने वाला। यही कारण है कि शिव को दु:खों को नाश करने वाले देवता के रुप में पूजा जाता है। व्यावहारिक जीवन में कोई दु:खों को तभी भोगताहै, जब तन, मन या कर्म किसी न किसी रूप में अपवित्र होते हैं। शिव के रुद्र रूप की आराधना का महत्व यही है कि इससे व्यक्ति का चित्त पवित्र रहता है और वह ऐसे कर्म और विचारों से दूर होता है, जो मन में बुरे भाव पैदा करें। शास्त्रों के मुताबिक शिव ग्यारह अलग-अलग रुद्र रूपों में दु:खों का नाश करते हैं। यह ग्यारह रूप एकादश रुद्र के नाम से जाने जाते हैं। जानते हैं ऐसे ही ग्यारह रूद्र रूपों को (1). शम्भू – शास्त्रों के मुताबिक यह रुद्र रूप साक्षात ब्रह्म है। इस रूप में ही वह जगत की रचना, पालन और संहार करते हैं। (2.) पिनाकी – ज्ञान शक्ति रुपी चारों वेदों के के स्वरुप माने जाने वाले पिनाकी रुद्र दु:खों का अंत करते हैं। (3) गिरीश – कैलाशवासी होने से रुद्र का तीसरा रुप गिरीश कहलाता है। इस रुप में रुद्र सुख और आनंद देने वाले माने गए हैं। (4) स्थाणु – समाधि, तप और आत्मलीन होने से रुद्र का चौथा अवतार स्थाणु कहलाता है। इस रुप में पार्वती रूप शक्ति बाएं भाग में विराजित होती है। (5) भर्ग – भगवान रुद्र का यह रुप बहुत तेजोमयी है। इस रुप में रुद्र हर भय और पीड़ा का नाश करने वाले होते हैं। (6) भव – रुद्र का भव रुप ज्ञान बल, योग बल और भगवत प्रेम के रुप में सुख देने वाला माना जाता है। (7) सदाशिव – रुद्र का यह स्वरुप निराकार ब्रह्मका साकार रूप माना जाता है। जो सभी वैभव, सुख और आनंद देने वाला माना जाता है। (8)शिव – यह रुद्र रूप अंतहीन सुख देने वाला यानि कल्याण करने वाला माना जाता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए शिव आराधना महत्वपूर्ण मानीजाती है। (9) हर – इस रुप में नाग धारण करने वाले रुद्र शारीरिक, मानसिक और सांसारिक दु:खों को हर लेते हैं। नाग रूपी काल पर इन का नियंत्रण होता है। (10) शर्व – काल को भी काबू में रखने वाला यह रुद्र रूप शर्व कहलाता है। (11) कपाली – कपाल रखने के कारण रुद्र का यह रूप कपाली कहलाता है। इस रुप में ही दक्ष का दंभ नष्ट किया, किंतु प्राणीमात्र

के लिए रुद्र का यही रूप समस्त सुख देने वाला माना जाता है। हमारा मानना है की यह ग्यारह रुद्ररूप आगे संशोधन के लिये सन्दर्भ के लिये ,उद्देश्यप्राप्ति के लिये काम लग सकते है।

पंडित धनञ्जय शर्मा(२००७) अपने आर्टिकल में लिखते है की भगवान् शिवा देवों के देव महादेव तीनों लोकों के स्वामी हैं। सृष्टि के संहारक और पालक भगवान शिव, लिंग रूप में प्रकट हुए थे। शिव के अनेक रूप हैं जिसमें उनका रूद्र और नटराज रूप काफी प्रसिद्ध है। शिव पुराण में भोलेनाथ के सभी रूपों का वर्णन विस्तार से है। शिव ने असंख्य रूप सृष्टि के कल्याण के लिए धारण किए और हर रूप में अपने भक्तों के मन को मोह लिया। शिव के रूद्र और नटराज रूप के पीछे छिपे रहस्य के बारे में आइए जानते हैं-:। भगवान शिव को अजन्मा अविनाशी कहा गया है। उनकी उत्पत्ति की कोई कथा नहीं है किंतु संसार में आने वाले हर प्राणी, वस्तु का कहीं न कहीं आदि जरूर है। विष्णु पुराण में वर्णित एक कथा से ज्ञात होता है कि ब्रह्मा जी ने शिव के रूद्र रूप को जन्म दिया था। कथा के अनुसार ओंकार स्वरूप शिव ने ब्रह्मा जी से अपने शरीर की रचना का आग्रह किया तो ब्रह्मा जी ने एक सुंदर से बालक का निर्माण किया। जन्म लेते ही वह बालक रोने लगा और ब्रह्मा जी से अपना नाम पूछा तो उन्होंने परमेश्वर के उस स्वरूप को अपनी गोद में बैठा लिया और कहा कि जन्म लेते ही आपने रुदन किया है इसलिए आप रूद्र कहलाएंगे। लेखक आगे बताते है की सृष्टि के प्रथम नर्तक के रूप में भगवान शिव त्रिपुर असुर का वध करने के बाद प्रसन्नता से नृत्य करने लगे। प्रारंभ में वह अपनी पूरी भुजाएं खोलकर नृत्य नहीं करते क्योंकि ऐसा करने से सृष्टि छिन्न भिन्न होने लगेगी इसलिए वह अपनी भुजाओं को संकुचित करके नृत्य करते हैं लेकिन धीरे-धीरे नृत्य में ऐसे शिव मग्न होने लगते हैं कि उन्हें किसी बात का होश नहीं रहता है और सृष्टि का संतुलन बिगड़ने लगता है। तब संसार की रक्षा के लिए देवी पार्वती प्रेम और आनंद से 'लास्य' नृत्य करने लगती हैं। देवी पार्वती के नृत्य से सृष्टि में संतुलन आता है और शिव शांत होते हैं। नृत्य करते हुए शिव का यही रूप नटराज कहलाता है।

मुकुंजा शर्मा (१९८६) अपनी सम्पादित पुस्तक निरुक्तं में बताते है की शिव भगवान् के विभिन्न स्वरूप पृथ्वीलोक के जिव मात्र को शिक्षा के साथ नियति के बारेमें बताया है । यह ग्रन्थ के अभ्यास से प्रतीत होता है की रूद्र तत्व जरुरी है और देवताशास्त्र आज के जमाने में भी कोड ऑफ कदकत के रूपमें इंसान को काम लग सकता है । इसी तरह पूर्व साहित्यकी मीमांसा करने से हमारे लिए संशोधन के उद्देश्य साफ़ दीखते जा रहे है और जो ज्ञान अंतर है वह अगले पॉइंट में बता सकते है।

शोध अंतराल

(1) शास्त्रों के अनुसार शम्भू स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (2) शास्त्रों के अनुसार पिनाकी स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों

के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (3) शास्त्रों के अनुसार गिरीश स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (4) शास्त्रों के अनुसार स्थाणु स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (5) शास्त्रों के अनुसार भर्ग स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (6) शास्त्रों के अनुसार भव स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (7) शास्त्रों के अनुसार सदाशिव स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (8) शास्त्रों के अनुसार शिव स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (9) शास्त्रों के अनुसार हर स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (10) शास्त्रों के अनुसार शर्व स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें । (11) शास्त्रों के अनुसार कपाली स्वरूप समजने के लिये विविध लेखों और पंडितों के ग्रंथों में उचित वर्णन किया है लेकिन अकादमी रूपमें बहुत ही कम संशोधन हुआ दिखता है इस लिए शभु का स्वरूप रूद्र स्वरूप के संदर्भमें पहचान करेंगें ।

शोधकार्य की कार्य पद्धति

इस शोध कार्यमें हेतुसिद्धि के लिए निश्चित किये गए परिमाण को ध्यान में रखते हुए निम्ननिर्दिष्ट शोधपद्धतियों को हम प्रस्तावित करते है। हमारी जानकारी सहायक स्वरूप का साहित्य है और इस वजह से हम ११ उद्देश्य को ध्यानमें रखते हुए विवरणात्मक विश्लेषण करके हेतुसिद्धि करने की कोशिश करेंगे साहित्यमें विवरणात्मक विश्लेषण बहुधा उपयोगमें आता है । भाषा गतिशील तत्व है विवरणात्मक विश्लेषण करने हेतु हम इस संशोधन में भाषा को स्थिर रखेंगे और विवरणात्मक विश्लेषण कार्यपद्धति का उपयोग करेंगे संशोधको के सामने दो बाते रहती है। (१) भाषा स्पष्ट है लेकिन जो उपलब्ध करना कहते है वह स्पष्ट

नहीं (२) जो उपलब्ध करना है वह स्पष्ट है लेकिन भाषा स्पष्ट नहीं है हमारी देवभाषा संस्कृत बहुत ही प्राचीन है और वेद इस भाषामें लिखे गए है। हिन्दू शास्त्रों की एक ही सामान्य भाषा का उपयोग है । हमारे प्राचीन शास्त्रों को प्रमाणभूत करने के लिए ज्यादातर तर्क अवं विश्वास की मदद ली गई है ऐसे हम उपलब्ध ग्रंघों का अध्ययन करके विवरणात्मक विश्लेषण को ही इस संशोधन हेतु सिद्ध करेंगे।

परिकल्पना परिक्षण

इस संशोधन में हमारे उद्देश्य के हिसाब से कुछ परिकल्पनाऑ का परिखां करने की जरुरत पड़ी तो हम निमनिर्दिष्ट परिकल्पनाओ के आधार पर आगे बढ़ेंगे ।

(१) शास्त्रों अनुसार शिव भगवान् के ११ रूद्र स्वरूप मानव जाती को उपयोगी है या नहीं है वह सिद्धः करनेकी कोशिश करेंगे । (२) शास्त्रों अनुसार शिव भगवान् के ११ रूद्र स्वरूप मानव जाती को उपयोगी है तो कैसे उपयोगी है वह प्रतिपादित करने की कोशिश करेंगे ।

(३) शास्त्रों अनुसार शिव भगवान् के ११ रूद्र स्वरूप मानव जाती को उपयोगी है तो क्यों उपयोगी है वह प्रतिपादित करने की कोशिश करेंगे । (४) शास्त्रों के अनुसार रुद्राष्टध्यायी का सिर्फ धार्मिक आधार है या नहीं वह सिद्धः करने की कोशिश करेंगे ।

विचार-विमर्श

शास्त्रों के मुताबिक शिव ग्यारह अलग-अलग रुद्र रूपों में दु:खों का नाश करते हैं। यह ग्यारह रूप एकादश रुद्र के नाम से जाने जाते हैं। जानते हैं ऐसे ही ग्यारह रूद्र रूपों को (1) शम्भू - शास्त्रों के मुताबिक यह रुद्र रूप साक्षात ब्रह्म है। इस रूप में ही वह जगत की रचना, पालन और संहार करते हैं।(2) पिनाकी - ज्ञान शक्ति रुपी चारों वेदों के के स्वरुप माने जाने वाले पिनाकी रुद्र दु:खों काअंत करते हैं।(3) गिरीश - कैलाशवासी होने से रुद्र का तीसरा रुप गिरीश कहलाता है। इस रुप में रुद्र सुख और आनंद देने वाले माने गए हैं।(4) स्थाणु - समाधि, तप और आत्मलीन होने से रुद्र का चौथा अवतार स्थाणु कहलाता है। इस रुप में पार्वती रूप शक्ति बाएं भाग में विराजित होती है।(5) भर्ग - भगवान रुद्र का यह रुप बहुत तेजोमयी है। इस रुप में रुद्र हर भय और पीड़ा का नाश करने वाले होते हैं।(6) भव - रुद्र का भव रुप ज्ञान बल, योग बल और भगवत प्रेम के रुप में सुख देने वाला माना जाता है।(7) सदाशिव - रुद्र का यह स्वरुप निराकार ब्रह्मका साकार रूप मानाजाता है। जो सभी वैभव, सुख और आनंददेने वाला माना जाता है। (8) शिव - यह रुद्र रूप अंतहीन सुख देने वाला यानि कल्याण करने वाला माना जाता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए शिव आराधना महत्वपूर्ण मानीजाती है।(9) हर - इस रुप में नाग धारण करने वाले रुद्र शारीरिक, मानसिक और सांसारिक दु:खों को हर लेते हैं। नाग रूपी काल पर इन का नियंत्रण होता है।10. शर्व - काल को भी काबू में रखनेवाला

यह रुद्र रूप शर्व कहलाता है।(11) कपाली - कपाल रखने के कारण रुद्र का यह रूप कपाली कहलाता है।इस रुप में ही दक्ष का दंभ नष्ट किया, किंतु प्राणीमात्र के लिए रुद्र का यही रूप समस्त सुख देने वाला माना जाता है।

उपरोक्त ग्यारह स्वरको मानवजीवन के लिए उपयोगी माना जाता है। क्यों की जीवन जीने की आचारसंहिता है। इस तरह हम सिद्ध कर सकए है की शिव के ग्यारह स्वरूप मानव जीवन के लिए उपयोगी है।

यदि देखा जाए तो भगवान शिव का संहारक रूप रूद्र है, रूद्र अर्थात अग्नि। मानव मात्र विभिन्न प्रकार की अग्नि से तप्त है जैसे रोग, शत्रु, आर्थिक कष्ट, मानसिक कष्ट ये सभी प्रकार के कष्ट मनुष्यों को तप्त करते रहें हैं। सभी प्रकार की कष्ट रूपी अग्नि किसी ना किसी प्रकार से रूद्र का ही स्वरूप है, क्योंकि शिव पुराण के अनुसार शिव ही ब्रहम रूप में सृष्टि के रचयिता, विष्णु रूप में पालनकर्ता तथा रूद्र रूप में संहार कर्ता हैं। इसी कष्ट रूपी अग्नि अर्थात रूद्र को शांत करने के लिए हम उन्हें अभिषेक अर्थात स्नान कराते हैं। भावहिं मेटि सकहि त्रिपुरारी ! अर्थात होनी को कोई टाल सकने का सामर्थ्य रखता है तो भगवान शिव ही हैं। किसी भी ग्रह का दुष्प्रभाव क्यों ना हो उसके प्रभाव को कम या समाप्त करने का अंतिम उपाय भगवान शिव की आराधना ही है। प्राणी मात्र के जितने भी सांसारिक कष्ट हैं उनका कारण किसी ना किसी ग्रह का दुष्प्रभाव होना ही है, जो सबसे अधिक पाप ग्रह अर्थात कष्ट देने वाले ग्रह हैं वे हैं - शनि, राहु और केतु। किसी भी व्यक्ति की कुंडली में अधिकांशतः और सबसे दुष्कर जितने भी योग हैं वे इन्ही के कारण बनते हैं, शनि साढ़े साती, ढैया, काल सर्प, केपद्रुम योग, विष्कुम्भ योग, बालारिष्ट योग, मारकेश योग जैसे अत्यंत ही कष्टकारी योगों का निदान केवल और केवल भगवान शिव की आराधना या अनुष्ठान ही है। आप चाहे सांसारिक कष्टों से छुटकारा पाना चाहते हों या मोक्ष, शिव अंतिम गंतव्य हैं। उपरोक्त विचार-विमर्श को ध्यानमें रखते हुए हमें यह भी जानना जरुरी है की रुद्रस्वरूप की आराधना मानवजीवन के लिए क्यों उपयोगी है। यह संशोधन धर्म आधारित तथ्यों पर है अगर धर्म है तो श्रद्धा भी होनी चाहिए और श्रद्धा है तो सबुरी या ने धीरज रखनी चाहिए । मतलब की रुद्रके विविध स्वरूप को पहचानना अति आवश्यक है और उनकी आराधना ही मनुष्यजीवन का उद्धारक बनता है। यह श्रद्धा कायम करने के लिए पूजा अर्चना करना जरुरी है। पूजा के लिए अलग अलग प्रक्रियाओं है जिसका अनुकरण करना अति आवश्यक है । यह पूजा सम्बन्धी प्रक्रियाओं जिक्र करना इस संशोधनपतरा के दायरेमें नहीं है इसीलिए हम सादर विचारविमर्शसे दूर रहेंगें ।

इसी तरह इस विचारविमर्श के परिपेक्ष्यमें हमने तीनों परिकल्पनाओं को सिद्ध करने का यथार्थ प्रयत्न किया है।

निष्कर्ष

विविश रुद्रस्वरूप की सेवा करने से मानवजीवन में से विपत्तियों दूर होती है। मानव निर्मूल हो कर अपनी जिंदगी अच्छी तरह से व्यतीत कर सकता है ।अलग अलग रुद्रस्वरूप की अलग अलग पूजा विधि है। उसका सेवन करने से अलग अलग शुभ फल की प्राप्ति होती है । उचित रूपसे पूजा करने से मानव को उचित फलप्राप्ति होती है। यह सब चर्चा को वैग्नानिक आधार भी मिला है।

सन्दर्भसूचि

१.**Hymns of the Rigveda** – टी. ऐच. ग्रिफीथ, चोखम्बा संस्कृत सीरीज ओफिस, वाराणसी, प्रथमावृत्ति, १९६४

२ पाणिनीयशिक्षा – संपा. प्रमोदवर्धन कौणिडन्न्यायन, चोखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, प्रथमावृत्ति, १९९८

३ श्रीमद्भागवतपुराणम् – संपा. कृश्णकुमार बाली, बी.आर. पब्लिशिंग कोर्पोरेशन, दिल्ली, प्रथमावृत्ति, २००६

४ श्रोमद्भागवतपुराणम् – संपा. जगदीशलाल भाास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, द्वितीयावृत्ति, १९८८

५ सांख्यकारिका – संपा. डो. व्रजमोहन चतुर्वेदी, ने"ानल पब्लि"ांग हाउस दिल्ली, द्वितीयावृत्ति, १९७५

६ सर्वानुक्रमणी – (शौनकाचार्य कृत) संपा. डो. ऐ.ऐ. मेकडोनल, चोखम्बा संस्कृत सीरीज ओफिस, वाराणसी, प्रथमावृत्ति, १९६९

७ वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी – संपा. डो. कलिकाप्रसादशुकल, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, १८७७

८ वैदिक इण्डेक्स (मेकडोनल ओर कीथ कृत), अनु. रामकुमार राय, चोखम्बा संस्कृत सीरीज ओफिस, वाराणसी, १९६२

९ वैदिक माइथोलोजी (मेकडोनल कृत), अनु, विश्वनाथ रोउ, चोखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, प्रथमावृत्ति, १९६४